Self Respect

22nd May,2014

अगर देह याद आई तो देह का बाप याद आएगा इसलिए बाप कहते हैं – आत्म-अभिमानी बनो | बाप पढ़ा रहे हैं, यह है पहला पाठ | तुम आत्मा अविनाशी हो, शरीर विनाशी है |

मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ – यह शब्द इस समय बाप पढ़ाते हैं |

हद का बाप तो कॉमन है | यहाँ तुमको मिला है बेहद का बाप, वह हम आत्माओं को बैठ समझाते हैं | वह एक ही बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है | यह पक्का कर देना चाहिए |

तुम बच्चों को अथाह ख़ुशी होनी चाहिए | ब्राह्मण बनने में बड़ी ख़ुशी है | ब्राह्मण बनते ही तब हैं जब उनको ख़ुशी मिलती है |

बाप आकर समझाते हैं अभी तुम्हारा लंगर भक्ति मार्ग से उठा, अब ज्ञान मार्ग में चला है | बाप कहते हैं मैं तुमको जो ज्ञान देता हूँ वह प्रायः लोप हो जाता है |

गाया भी जाता है – हीरे जैसा जन्म.....तुम भी पहले बाप को नहीं जानते थे, तुम कौड़ी जैसे थे | अभी बाप आकर हीरे जैसा बनाते हैं | बाप से ही हीरे जैसा जन्म मिलता है फिर कौड़ी जैसे क्यों बन पड़ते हो? तुम ईश्वरीय सन्तान हो ना | गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.....जब वहाँ शान्तिधाम में हैं तो उस मिलन में कोई फ़ायदा नहीं होता | वह तो सिर्फ़ पवित्रता वा शान्ति का स्थान है |

बुलाया भी बच्चों ने है | हम आते भी बच्चों के लिए हैं | बच्चों को ही कहते हैं तुमने बुलाया है, अब मैं आया हूँ |

यहाँ तो तुम जीव आत्मायें हो और परमात्मा बाप उनको अपना शरीर नहीं है, वह शरीर धारण कर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं | तुम बाप को जानते हो और कहते हो – बाबा, बाप कहेंगे – ओ बेटे | लौकिक बाप भी कहेगा ना – हे बाल बच्चे आओ तो तुमको टोली खिलाऊं | झट सब भागेंगे | यह बाप भी कहते हैं – बच्चे आओ तो तुमको बैकुण्ठ का मालिक बनाऊं, तो ज़रूर सब भागेंगे |

बाप कहते हैं – हे बच्चों | तो बच्चों का भी हुल्लास से निकलना चाहिए – हे बाबा |

तुम अभी बाप के सम्मुख बैठे हो | बेहद के बाप को याद करने से बेहद की बादशाही भी ज़रूर याद आयेगी | ऐसे बाप को कितना प्यार से रेसपान्स करना चाहिए | बाप तुम्हारे बुलाने से आया है | ड्रामा अनुसार एक मिनट भी आगे-पीछे नहीं हो सकता |

अभी तुम संगम पर खड़े हो | बाप सतयुग की स्थापना कर रहे हैं | अभी है कलियुग, करोड़ों मनुष्य हैं |

अभी तो सतयुग की हिस्ट्री रिपीट होगी |तुम समझते हो हम नई दुनिया में ऊँच पद पाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं |

मरना तो सबको ज़रूर है | राम गयो रावण गयो.....जो योग में रह आयु बढ़ाते होंगे उनकी ज़रूर बढ़ेगी | अपनी खुशी से शरीर छोड़ देंगे | जैसे मिसाल बताते हैं ब्रह्म ज्ञानी हैं, वह भी ब्रह्म में जाने के लिए ऐसे ख़ुशी से शरीर छोड़ते हैं |

तुम जानते हो इस पुरुषार्थ से हम यह पद पा रहे हैं | स्वर्ग की स्थापना हो रही है | हम पढ़ रहे हैं यह पद पाने के लिए, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार |

इस समय हम ईश्वरीय सम्प्रदाय और प्रजापिता ब्रह्मा की मुख वंशावली भाई-बहन हैं | हम आत्मायें सब भाई-भाई हैं |

सदा इसी नशे में रहना है कि हम बाप के पास आये हैं कौड़ी से हीरा बनने | हम हैं ईश्वरीय सन्तान |

अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |